

## पाठ 12- घर की याद (भवानीप्रसाद मिश्र)

सरल व्याख्या

### भाग 1: बरसात और घर की याद

1. आज पानी गिर रहा है, बहुत पानी गिर रहा है,  
रात भर गिरता रहा है, प्राण मन धिरता रहा है,

.....  
.....

बहुत पानी गिर रहा है, घर नज़र में तिर रहा है,  
घर कि मुझसे दूर है जो, घर खुशी का पूर है जो,

\* कठिन शब्दों के अर्थ:

- प्राण मन धिरना: मन में पुरानी यादों या उदासी का छा जाना।
- घनेरी: बहुत गहरी या घनी।
- तिर रहा है: आँखों के सामने तैर रहा है (याद आ रहा है)।
- पूर: पूर्ण या भरा हुआ।

\* सरल शब्दों में अर्थ:

कवि जेल में बंद हैं और बाहर लगातार तेज़ बारिश हो रही है। कवि कहते हैं कि आज बहुत पानी बरस रहा है। रात भर से लगातार हो रही इस बारिश के कारण मेरा मन घर की यादों से धिर गया है। बादलों के घने अंधेरे के कारण सुबह कब हो गई, पता ही नहीं चला; बस बहुत देर तक सोने के बाद ऐसा महसूस हुआ कि सुबह हो गई है। चारों तरफ सन्नाटा है और रात जैसा ही माहौल है। पानी झमाझम बरस रहा है, हवा सरसरा रही है और पत्ते हिल रहे हैं, जिससे ठंडक और अकेलेपन के कारण प्राण काँप उठते हैं। इस बरसात में कवि को अपने घर की याद आ रही है, जो इस समय उनसे बहुत दूर है, लेकिन वह घर खुशियों से भरा हुआ है।

### भाग 2: भाई-बहनों का मिलन और घर की स्थिति

2. घर कि घर में चार भाई, मायके में बहिन आई,

.....  
.....

घर कि घर में सब जुड़े है, सब कि इतने कब जुड़े हैं,  
चार भाई चार बहिनें, भुजा भाई प्यार बहिनें,

\* कठिन शब्दों के अर्थ:

- मायके: लड़की के माता-पिता का घर।
- परिताप का घर: कष्ट या दुःख का घर।
- छिन: क्षण या पल।
- भुजा भाई: भाई कर्मठ और रक्षा करने वाले (भुजाओं के समान) हैं।

\* सरल शब्दों में अर्थ:

कवि अपने परिवार को याद करते हुए कहते हैं कि मेरे घर में चार भाई हैं। आज मेरी शादीशुदा बहन भी अपने मायके (पिता के घर) आई होगी। वह तो खुश होकर आई होगी, लेकिन जब उसने देखा होगा कि उसका एक भाई (कवि) जेल में है, तो वह पिता का घर उसके लिए दुःख और शोक का घर बन गया होगा। जेल में कवि का एक-एक पल सौ साल के बराबर लंबा और भारी कट रहा है। कवि कहते हैं कि मेरा परिवार बहुत संयुक्त और आपस में जुड़ा हुआ है। हम चार भाई और चार बहनें हैं। भाई अपनी बहनों की रक्षा के लिए मजबूत भुजाओं की तरह हैं और बहनें असीम प्यार का प्रतीक हैं।

### भाग 3: अनपढ़ और ममतामयी माँ

#### 3. और माँ बिन-पढ़ी मेरी, दुःख में वह गढ़ी मेरी

.....  
*उसे लिखना नहीं आता, जो कि उसका पत्र पाता।*

\* कठिन शब्दों के अर्थ:

- गढ़ी मेरी: दुःख में डूबी हुई या दुःखों को सहने वाली।
- स्नेह-धारा: प्रेम की नदी/प्रवाह।
- पसारा: फैलाव या विस्तार।

\* सरल शब्दों में अर्थ:

कवि अपनी माँ को याद करते हुए भावुक हो जाते हैं। वे कहते हैं कि मेरी माँ पढ़ी-लिखी नहीं है और इस समय वह मेरे वियोग के दुःख में पूरी तरह डूबी होगी। माँ ऐसी ममतामयी है कि यदि एक बार उनकी गोद में सिर रख लिया जाए, तो दुनिया का सारा दुःख गायब हो जाता है। माँ के प्रेम की ताकत इतनी बड़ी है कि जेल की इस कोठरी में भी मुझे उनकी ममता का अहसास हो रहा है। यदि माँ को लिखना आता, तो वह मुझे पत्र जरूर भेजती, लेकिन अनपढ़ होने के कारण मैं उनका पत्र नहीं पा सकता।

### भाग 4: वीर और स्वाभिमानी पिताजी

#### 4. और पानी गिर रहा है, घर चतुर्दिक घिर रहा है,

.....  
*बोल में बादल गरजता, काम में झंझा लरजता,*

\* कठिन शब्दों के अर्थ:

- चतुर्दिक: चारों दिशाओं में।
- वज्र-भुज: लोहे या वज्र के समान मजबूत हाथ।
- नवनीत-सा उर: मक्खन जैसा कोमल हृदय।
- व्यापा: असर करना या प्रभावित करना।
- बिचकें: डरना या पीछे हटना।
- झंझा लरजता: आंधी-तूफान भी जिसके काम के सामने काँप जाए (तेज गति से काम करना)।

### \* सरल शब्दों में अर्थ:

बाहर पानी बरस रहा है और कवि का मन चारों तरफ से घर की यादों से घिर गया है। अब वे अपने पिताजी को याद करते हैं। उनके पिताजी सीधे-साधे लेकिन बेहद बहादुर हैं। उनकी भुजाएं वज्र की तरह मजबूत हैं, लेकिन उनका दिल मक्खन की तरह कोमल है। उम्र बढ़ने के बावजूद बुढ़ापे का असर उन पर बिल्कुल नहीं दिखता। वे आज भी युवाओं की तरह दौड़ सकते हैं और बच्चों की तरह खिलखिलाकर हंस सकते हैं। वे इतने साहसी हैं कि मौत या शेर के सामने आने पर भी नहीं डरेंगे। उनकी आवाज़ में बादलों जैसी गर्जना है और उनके काम करने की रफ्तार आंधी जैसी तेज़ है।

## भाग 5: पिताजी की दिनचर्या और पाँचवें बेटे का दुःख

### 5. आज गीता पाठ करके, दंड दो सौ साठ करके,

रो पड़े होंगे बराबर, पाँचवे का नाम लेकर,

### \* कठिन शब्दों के अर्थ:

- **दंड:** एक प्रकार का व्यायाम (Push-ups)।
- **मुगदर:** व्यायाम करने का एक भारी लकड़ी का साधन।
- **मूठ:** मुगदर को पकड़ने का हिस्सा (हैंडल)।
- **नैन जल:** आँखों में आँसू।

### \* सरल शब्दों में अर्थ:

कवि कल्पना करते हैं कि आज सुबह भी हमेशा की तरह पिताजी ने गीता का पाठ किया होगा, 260 दंड बैठकें लगाई होंगी और मुगदर से व्यायाम किया होगा। लेकिन जब वे व्यायाम करके छत से नीचे आए होंगे, तो बाकी बच्चों को देखकर उनकी आँखों में आँसू आ गए होंगे। जब उन्होंने अपने चारों बेटों और चारों बहनों को हँसते-खेलते या खड़े देखा होगा, तो उन्हें अपने पाँचवें बेटे (कवि भवानी) की याद आ गई होगी। वह पिता, जो कभी किसी के सामने नहीं रोता और जिसे बुढ़ापा छू भी नहीं पाया, आज अपने पाँचवें बेटे को वहाँ न पाकर फूट-फूटकर रो पड़े होंगे।

## भाग 6: सोने पर सुहागा और माँ की सांत्वना

### 6. पाँचवाँ हूँ मैं अभागा, जिसे सोने पर सुहागा,

कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ, धीर मैं खोता, कहाँ हूँ

### \* कठिन शब्दों के अर्थ:

- **सोने पर सुहागा:** बहुत श्रेष्ठ या सबसे प्यारा।
- **स्वर्ण बेटे:** सोने जैसे गुणी बेटे।
- **हेटे:** कमतर या छोटे (तुच्छ)।
- **लीक:** परंपरा या सही रास्ता।

- धीरः धैर्य या धीरज।

**\* सरल शब्दों में अर्थ:**

कवि खुद को अभागा मानते हैं क्योंकि वे परिवार से दूर जेल में हैं। पिताजी हमेशा उन्हें अपने बाकी बेटों से ज्यादा प्यार करते थे और 'सोने पर सुहागा' कहते थे। लेकिन आज उनके वे सोने जैसे बाकी बेटे भी उन्हें फीके (कमतर) लग रहे होंगे, क्योंकि उनका सबसे लाडला बेटा जेल में बंद है।

पिताजी को रोता देख माँ ने अपने दुःख को छिपाकर उन्हें सांत्वना दी होगी। माँ ने कहा होगा कि तुम क्यों रो रहे हो? भवानी जेल में ठीक होगा। वह तुम्हारे दिखाए रास्ते और देश के प्रति अपनापन समझकर ही तो जेल गया है। यह तो हमारे परिवार की परंपरा है। अगर वह देश सेवा के रास्ते से पीछे हट जाता, तो मेरी कोख लज्जित हो जाती। इसलिए तुम खुद को कमजोर मत करो, तुम्हें रोता देख बाकी बच्चे भी रोने लगेंगे। पत्नी की बात सुनकर पिताजी ने अपने आंसुओं को पीते हुए और भारी दुःख सहते हुए कहा होगा— "मैं कहाँ रो रहा हूँ? मैं अपना धीरज नहीं खो रहा हूँ।"

**भाग 7: बचपन की यादें और परिवार का रोना**

**7. गिर रहा है आज पानी, याद आता है भवानी,**

.....  
 .....

**आज ऐसा कुछ हुआ होगा, आज सबका मन चुआ होगा।**

**\* कठिन शब्दों के अर्थ:**

- झड़ी-झारी: लगातार होने वाली बारिश।
- बाड़े: घर के पीछे का खुला बगीचा या आँगन।
- बेला: एक प्रकार की लता/फूल का पौधा।
- मन चुआ होगा: मन पसीज गया होगा या रो पड़ा होगा।

**\* सरल शब्दों में अर्थ:**

पिताजी मन ही मन भवानी को याद करके कह रहे होंगे कि भवानी को यह बरसात बहुत पसंद थी। वह नंगे बदन और खुले सिर सावन की बारिश में घूमता था, बगीचे में जाकर लौकी के बीज बोता था और अपनी बहनों को दिखाता था कि देखो इस बेल में फूल आ गए हैं। पिताजी भले ही कह रहे हों कि "मैं नहीं रोऊँगा", लेकिन अंदर ही अंदर उनकी आँखों से आँसू बह रहे होंगे। इसके बाद पूरे घर का माहौल गमगीन हो गया होगा। भाई, बहनें, माँ और भाभी सभी भवानी की याद में व्याकुल (पागल से) हो गए होंगे। वे समाज और बड़ों के सामने खुलकर रो भी नहीं पा रहे होंगे और अंदर ही अंदर छटपटा रहे होंगे। आज घर के हर सदस्य का मन दुःख से भर गया होगा।

**भाग 8: प्रकृति का ठहराव और कवि का अकेलापन**

**8. अभी पानी थम गया है, मन निहायत नम गया है,  
 एक से बादल जमे हैं, गगन-भर फैले रमे हैं,**

.....  
 .....

**तू कि प्रिय से दूर होकर, बह चला रे पूर होकर,  
दुःख भर क्या पास तेरे, अश्रु सिंचित हास तेरे !**

**\* कठिन शब्दों के अर्थ:**

- निहायत नमः बहुत अधिक भावुक या उदासा।
- फाँकें: दरारें या खाली जगह (जहाँ से धूप आ सके)।
- लुनाई: सुंदरता।
- दश-दिशा: दसों दिशाएं।
- उर: हृदय या दिला।
- तृषा: प्यास या इच्छा/तड़पा।
- अश्रु सिंचित हास: आँसू भरी मुस्कान।

**\* सरल शब्दों में अर्थ:**

अब बाहर की बारिश रुक गई है, लेकिन कवि का मन यादों के कारण बहुत उदास (नम) हो गया है। आसमान में बादल इस तरह छाए हैं कि सूरज की किरणों के आने का कोई रास्ता नहीं है। साफ-सुथरा आसमान ऐसा लग रहा है मानो माँ ने मिट्टी से आँगन लीप दिया हो। चारों तरफ एक शांत सुंदरता फैली है। पेड़-पौधे भी शांत खड़े हैं मानो आँखें बंद करके ध्यान लगा रहे हों। तभी एक पक्षी बोलता है, जिसकी आवाज़ कवि के दिल के जख्मों को हरा कर देती है। कवि मनुष्य के मन की कमजोरी पर विचार करते हुए कहते हैं कि हे इंसान के दिल! तुझमें इतनी तड़प क्यों है? तू ज़रा सा दुःख भी सहन नहीं कर पाता। इंसान का अपने मन पर वश नहीं है। जैसे ही मुश्किलों की हवा या लहर आती है, इंसान टूट जाता है। आज मैं अपने प्रियजनों से दूर होकर आँसू बहा रहा हूँ और मेरे पास इस दुःख के अलावा कुछ नहीं है।

## भाग 9: पिताजी का विराट व्यक्तित्व और सावन से गुहार

**9. पिताजी का वेश मुझको, दे रहा है क्लेश मुझको,  
देह एक पहाड़ जैसे, मन की बड़ का झाड़ जैसे,**

.....

.....

**हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन,  
तुम बरस लो वे न बरसें, पाँचवे को वे न तरसें,**

**\* कठिन शब्दों के अर्थ:**

- क्लेश: कष्ट या दुःख।
- बड़ का झाड़: बरगद का पेड़ (विराट और छायादार)।
- खम न होले: झुकना नहीं।
- धीर देना: सांत्वना या धैर्य देना।
- जी चीर देना: दिल को दुखाना।

**\* सरल शब्दों में अर्थ:**

कवि को अपने पिताजी का स्वरूप याद करके बहुत कष्ट हो रहा है। उनका शरीर भले ही पहाड़ जैसा मजबूत है और उनका व्यक्तित्व बरगद के विशाल पेड़ जैसा छायादार है, लेकिन उनका दिल बहुत भावुक है। उस बरगद रूपी पिता का अगर एक भी पत्ता (बेटा) अलग हो जाए, तो उनकी आँखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ती है। उन्हें अपने बच्चों की बहुत चिंता रहती है। कवि सावन की हवा से प्रार्थना करते हैं कि हे हवा! तुम जाकर मेरे पिताजी को ढांडस (धैर्य) बंधाना, उनका दिल मत दुखाना। कवि सावन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हे सुंदर, पवित्र और मंगलकारी सावन! तुम चाहे जितना मर्जी बरस लो, लेकिन मेरे माता-पिता की आँखों से आँसू नहीं बरसने चाहिए। वे अपने पाँचवें बेटे (मुझ) के लिए न तरसें।

### भाग 10: सावन के माध्यम से झूठा संदेश (जेल की सच्चाई को छिपाना)

**10. मैं मजे में हूँ सही है, घर नहीं हूँ बस यही है,  
किन्तु यह बस बड़ा बस है, इसी बस से सब विरस है,**

.....  
.....  
**कूदता हूँ, खेलता हूँ, दुख डट कर झेलता हूँ  
और कहना मस्त हूँ मैं, यों न कहना अस्त हूँ मैं,**

#### \* कठिन शब्दों के अर्थ:

- विरस: फीका, रसहीन या उदास।
- कातने में व्यस्त: सूत कातने (गाँधी जी के चरखे) के काम में लगा होना।
- सत्तर सेर: लगभग 65-70 किलोग्राम वजन।
- अस्त हूँ: निराश या डूबा हुआ हूँ (कमजोर होना)।

#### \* सरल शब्दों में अर्थ:

कवि सावन को अपना दूत बनाकर घर संदेश भेजते हैं। वे कहते हैं कि वैसे तो मैं यहाँ मजे में हूँ, बस कमी इतनी ही है कि मैं घर पर नहीं हूँ। लेकिन यह 'बस' कोई छोटी बात नहीं है, इसी अलगाव के कारण मेरा पूरा जीवन रसहीन और उदास हो गया है। मगर तुम मेरे माता-पिता से यह कड़वा सच मत कहना। उन्हें धीरज देते हुए कहना कि भवानी जेल में पढ़-लिख रहा है, वह वहाँ भी आपका नाम रोशन कर रहा है। वहाँ उसे सब लोग बहुत प्यार करते हैं, इसलिए उसके लिए शोक (दुःख) न करें। उनसे कहना कि वह गांधीजी के चरखे पर सूत कातने में व्यस्त रहता है, उसका वजन सत्तर सेर हो गया है और वह खूब छककर खाना खाता है। वह वहाँ खेलता-कूदता है और दुखों का डटकर सामना करता है। उन्हें यही कहना कि मैं मस्त हूँ, यह मत कह देना कि मैं निराश और उदास (अस्त) हो चुका हूँ।

### भाग 11: कड़ा पहरा और अंतिम गुहार

**11. हाय रे, ऐसा न कहना, है कि जो वैसा न कहना,  
कह न देना जागता हूँ, आदमी से भागता हूँ,**

.....  
.....

## तुम बरस लो वे न बरसे, पाँचवें को वे न तरसें।

### \* कठिन शब्दों के अर्थ:

- आदमी से भागता हूँ: एकांतप्रिय हो जाना या डिप्रेशन के कारण लोगों से कतराना।
- मौन: चुपचापा।
- बक न देना: गलती से सच मत बोल देना।

### \* सरल शब्दों में अर्थ:

कवि सावन को सचेत करते हुए कहते हैं कि हे सावन! संभलकर बात करना। जो सच है (कि मैं जेल की यातनाओं के कारण रात-रात भर जागता हूँ, डिप्रेशन की वजह से इंसानों से दूर भागता हूँ, गुमसुम रहता हूँ और अपनी सुध-बुध खो चुका हूँ) वह सब गलती से भी मेरे परिवार को मत बता देना। देखना, वहाँ जाकर कुछ ऐसी-वैसी बात मत बोल देना जिससे उन्हें मुझ पर कोई शक हो जाए। अंत में कवि फिर से सावन से प्रार्थना करते हैं कि हे मेरे पवित्र और सुंदर सावन! तुम धरती पर खुशहाली बनकर चाहे जितना मर्जी बरस लो, लेकिन मेरे घर वाले अपने इस पाँचवें बेटे की याद में न रोएँ और न ही तड़पें।